The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com

चौधरी देवीलाल : राजनीति के भीष्म पितामह

अंजू

पीएच0-डी0 स्कॉलर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक,हरियाणा
ई - मेल : anju.rs.polsc@mdurohtak.ac.in
फोन नं. : 9729982887

सारांश :

चौधरी देवीलाल एक ऐसे नेता थे जिन्हें किसानों के मसीहा के रूप में हमेशा याद किया जाएगा। चौधरी देवीलाल को किसानों का मसीहा के अलावा हरियाणा के जन्मदाता, राष्ट्रीय राजनीति के भीष्म पितामह, ताऊ या किंग मेकर के नाम से भी जानते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, वे 1952, 1959 और 1962 में पंजाब विधान सभा के लिए चुने गए। जब 1966 में पंजाब से अलग हरियाणा राज्य बनाया गया, तो वे पांच बार हरियाणा विधान सभा के सदस्य बने। 1989 में नौवीं लोकसभा के लिए चुने जाने के बाद, चौधरी देवीलाल भारत के उप प्रधान मंत्री बने। जब 6 अप्रैल, 2001 को उनकी मृत्यु हुई, तब वे राज्य सभा के वर्तमान सदस्य थे। उन्होंने अपने सरल और जमीन से जुड़े दृष्टिकोण और लोकतांत्रिक मानदंडों में दृढ़ विश्वास से देश के करोड़ों लोगों का दिल जीत लिया। शोध गैप में ये सामने आया है कि चौधरी देवीलाल पर बहुत ही कम शोध कार्य उपलब्ध है या कहे है ही नही। इसलिए इस शोध कार्य का उद्देश्य चौधरी देवीलाल का एक राजनेता के रूप में दिए गए योगदान को सामने लाना है ताकि लोग इस महान शख्सियत के बारे में लोग जान सके।

शब्द सूचक - चौधरी देवीलाल, नेता, किसान, आंदोलन, लोकतांत्रिक मूल्य, बहुआयामी व्यक्तित्व आदि।

परिचय:-

किसानों के मसीहा चौधरी देवी लाल का जन्म 25 सितंबर, 1914 को तेजा खेड़ा गांव, सिरसा, हरियाणा में हुआ था। इनके पिता का नाम चौधरी लेख राम तथा माता का नाम श्रीमती सुगा देवी था। चौधरी देवी लाल का विवाह 1926 में श्रीमती हरकी देवी के साथ हुआ था। चौधरी देवीलाल ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने पैतृक गांव चौटाला, हरियाणा से प्राप्त की थी। इनके माध्यमिक शिक्षा डबवाली सरकारी स्कूल में हुई। पंजाब के मोगा जिले के एस डी स्कूल से 1927 में उच्च माध्यमिक की शिक्षा ली। चौधरी देवीलाल ने अपने उच्च माध्यमिक शिक्षा के दौरान ही राजनीति में रुचि लेनी शुरू कर दी थी। दिसंबर 1929 में लाहौर में कांग्रेस अधिवेशन में चौधरी देवी लाल, चौधरी बलबीर सिंह के साथ शामिल हुए तो स्कूल के प्रधानाचार्य ने नाराज़ होकर उन्हें स्कूल से निकाल दिया था।

स्वतंत्रता आंदोलन में भागीदारी:-

युवावस्था से ही चौधरी देवीलाल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की तरफ आकर्षित थे। देवीलाल ने स्कूली सिक्षा के दोरान ही विभिन्न समाचार पत्रों के माध्यम से रास्ट्रीय स्तर की घटनाओं के बारे में जानकारी जुटाई। समकालीन घटनाओं से चौधरी देवीलाल की सोच प्रभावित हुई और उनमें राष्ट्रवादी भावना प्रबल हुई। दिसंबर 1929 में लाहौर में रावी नदी के तट पर आयोजित कांग्रेस के ऐतिहासिक अधिवेशन में उन्होंने अपने मित्रों के साथ भाग लिया और पूर्ण स्वराज के प्रस्ताव को स्वीकार होते देखा। वे आगे अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सके क्योंकि राष्ट्रीय आंदोलन की भावना उनके दिमाग में हर समय हावी रहती थी। उसी दौरान , महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया जिसमें उन्होंने छात्रों से आह्वान किया कि "स्कूल / कॉलेज छोड़ दो और स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो जाओ"। अन्य छात्रों की तरह देवीलाल ने भी अपनी पढ़ाई छोड़ दी और राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़े। नमक आंदोलन में भाग लेने के कारण 8 अक्टूबर, 1930 में हिसार जेल भी गए थे, 1931 में ही इन्हें रिहा कर दिया गया था। 1938 में चौधरी देवीलाल को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधि के रूप में चुना गया था। भारत छोड़ो आंदोलन में भागीदारी के समय फिर गिरफ्तार किया गया था। 1944 में ये पहली बार चौधरी छोटूराम से मिले थे तब छोटूराम ने इन्हें कांग्रेस पार्टी छोड़कर अपनी पार्टी में आमंत्रित किया था लेकिन इन्होंने साफ मना कर दिया था। चौधरी छोटूराम के निर्धन व स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हरियाणा क्षेत्र की राजनीति में प्रोफेसर शेर सिंह और चौधरी देवीलाल का वर्चस्व रहा,। सन 1946-1966 के बीच हरियाणा क्षेत्र की राजनीति चौधरी देवीलाल के इर्दगिर्द रही, क्षेत्रीय हितों के लिए जब जरूरत पड़ी इन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थो को तिलांजलि दी। चौधरी देवीलाल की प्रतिबद्धता कृषक वर्ग से थी,

इनकी राजनीति चौधरी छोटूराम के समान ही थी। चौधरी छोटूराम के बाद वे एकमात्र जाट नेता थे, जिन्होंने इतने बड़े क्षेत्र में ख्याति पाई।

हरियाणा राज्य के निर्माण में योगदान:-

चौधरी देवीलाल के महत्वपूर्ण योगदानों में से एक हरियाणा को एक अलग राज्य के रूप में बनाने के लिए किया गया उनका निरंतर प्रयास था। हरियाणा को अलग राज्य बनवाने के लिए चौधरी देवीलाल व चौधरी चरण सिंह ने उत्तरप्रदेश व हरियाणा क्षेत्र से 125 विधायकों का हस्ताक्षर युक्त ज्ञापन तत्कालीन केंद्रीय गृह मंत्री जी.वी.पंथ को सौपा। राज्य पुनर्गठन आयोग 1955 को विभिन्न संगठनों से भी बड़ी संख्या में ज्ञापन प्राप्त हुआ जिसमें एक अलग हरियाणा राज्य बनाने की मांग की गई जिसमें तत्कालीन पंजाब के हिंदी भाषी क्षेत्र और आसपास के राज्यों के कुछ अन्य हिंदी भाषी क्षेत्र शामिल थे। लेकिन आयोग ने हरियाणा को पंजाब से अलग करने के गुण-दोष पर कोई राय व्यक्त नहीं की। देवीलाल आयोग के समक्ष पेश हुए और आग्रह किया कि सिंचित भूमि, उर्वरकों के वितरण, विद्युतीकरण कार्यक्रम और समग्र संतुलित विकास के संबंध में दोनों क्षेत्रों में विकासात्मक असमानता है। उन्होंने पंजाब के हिंदी भाषी क्षेत्रों को मिलाकर एक नए हरियाणा राज्य की मांग की। उन्होंने हरियाणा लोक समिति का गठन किया जिसने एक अलग राज्य के लिए आंदोलन का नेतृत्व किया। 3 अक्टूबर, 1965 को एक सम्मेलन बुलाया गया था जिसमें हरियाणा के कई नेताओं ने, उनकी राजनीतिक संबद्धता के बावजूद, भाग लिया और हरियाणा के एक अलग राज्य के निर्माण की मांग की। कन्वेंशन ने देवीलाल के साथ संयोजक के रूप में 21 सदस्यीय समिति नियुक्त की और मांग को पूरा करने की रणनीति बनाई। भारत सरकार ने संसदीय समिति की रिपोर्ट में निहित प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और आवश्यक सीमा समायोजन करने के लिए विशेषज्ञों का एक आयोग नियुक्त किया। आयोग की सिफारिशों के आधार पर, हरियाणा अस्तित्व में आया और 1 नवंबर, 1966 को भारतीय संघ का 17वां राज्य बना

हरियाणा की राजनीति में:-

चौधरी देवीलाल को दो बार हरियाणा के मुख्यमंत्री के रूप में सेवा करने का गौरव प्राप्त हुआ। उनका राजनीतिक जीवन संघर्ष और आन्दोलनों से परिपूर्ण रहा, अपने व्यक्तिगत हितों के लिए आसान रास्ता अपनाने की अपेक्षा उन्होंने जनता का विशेषकर किसानों के हितों का कठिन रास्ता चुना। विधान सभा से बाहर वे विरोध करते रहे और जेल जाने से वे कभी नही डरे। एक तरह से चौधरी देवीलाल ने चौधरी छोटूराम जितनी प्रसिद्धि प्राप्त की, लेकिन दोनों के लक्ष्य समान होने पर भी दोनों के तरीके अलग-अलग थे। राजनीतिक उथल-पुथल के दौरान 25 जून, 1975 को राष्ट्रीय आपातकाल लागू होने के साथ ही विपक्ष के कई नेताओं को आंतरिक सुरक्षा अधिनियम (MISA)

के रखरखाव के तहत गिरफ्तार कर लिया गया। देवीलाल को भी मीसा के तहत गिरफ्तार किया गया और 28 जनवरी, 1977 को रिहा कर दिया गया। आपातकाल के बाद, प्रमुख विपक्षी दलों ने एक साथ आकर जनता पार्टी का गठन किया। उन्होंने जनता पार्टी की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश का दौरा कर जोरदार प्रचार किया। केंद्र में जनता पार्टी की सरकार बनने के तुरंत बाद, जून, 1977 में हरियाणा विधान सभा के चुनाव हुए। देवीलाल ने विधानसभा चुनाव लड़ा और प्रचंड बहुमत से जीत हासिल की।

चौधरी देवीलाल को सर्वसम्मति से हरियाणा विधान सभा में जनता पार्टी के नेता के रूप में चुना गया और 21 जून, 1977 को पहली बार हरियाणा के मुख्यमंत्री बने। हरियाणा में जनता पार्टी के नेता के रूप में उनके चुने जाने पर विधान सभा में उन्होंने कहा, "विकास को गरीब लोगों की झोपड़ियों और कॉटेज में अपना प्रक्षेपण करना चाहिए, न कि चंडीगढ़ में सचिवालय की ऊंची इमारत में।" 4 जुलाई, 1977 को उनकी सरकार के दो सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की गई थी, ताकि देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में तेजी लाई जा सके।इन कार्यक्रमों में उच्च स्थानों से भ्रष्टाचार को हटाना और पानी और बिजली की व्यवस्था करना शामिल था। देवीलाल ने विधानसभा चुनावों के दौरान अभियान की अगुवाई करते हुए पार्टी के घोषणापत्र के साथ-साथ लोगों से किए गए वादों को लागू करने की पूरी कोशिश की। 17 जुलाई 1987 को चौधरी देवीलाल हरियाणा के दूसरी बार मुख्यमंत्री बने। चौधरी देवीलाल ने अपनी प्रसिद्धि के बल पर 1987 में 90 में से 85 सीट जीतकर कांग्रेस को केवल 5 सीटों तक सीमेट दिया।

एक राष्ट्रीय नेता के रूप में उभरना:-

दिसंबर 1984 में, कांग्रेस पार्टी ने संसदीय चुनावों में भारी जनादेश जीता। इसलिए उसके दबदबे वाली स्थिति को चुनौती देना मुश्किल था। लेकिन देवीलाल ने 1985 के राजीव गांधी-लोंगोवाल समझौते का विरोध किया, विशेष रूप से चंडीगढ़ को पंजाब में स्थानांतरित करने और इसे हरियाणा के साथ 'अन्याय' के रूप में वर्णित किया। उन्होंने 'न्याय युद्ध' नाम से एक व्यापक अभियान चलाया। उन्होंने रास्ता रोको आंदोलन भी आयोजित किया जो हरियाणा में दूर-दूर तक फैल गया। इसने पूरे देश में विपक्ष को प्रेरित किया, जिसके कारण विपक्षी दलों की एकता ने पहले जनता दल और बाद में 1989 में राष्ट्रीय मोर्चा के गठन का मार्ग प्रशस्त किया। 1980 में, जब सातवीं लोकसभा के मध्यावधि चुनाव हुए, देवीलाल ने सोनीपत संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ा और पहली बार लोकसभा के लिए चुने गए। सदन के पटल पर, उन्होंने सतलुज-यमुना नहर लिंक को जल्द पूरा करने और किसानों से संबंधित अन्य कल्याणकारी मुद्दों को उठाया। उन्होंने रावी-व्यास लिंक नहर को जल्द पूरा करने की भी मांग की। लेकिन इस लोकसभा में उनका कार्यकाल बहुत ही कम रहा। 1982 में जब हरियाणा विधान सभा के चुनाव हुए, तो देवीलाल ने महम

विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा और जीता। हालाँकि, उन्होंने हरियाणा के लोगों की सेवा करना पसंद किया और सातवीं लोकसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया।

उप प्रधान मंत्री के रूप में:-

1987-91 का काल चौधरी देवीलाल के सार्वजनिक जीवन में घटनापूर्ण रहा। 1987 में वे न केवल हरियाणा के मुख्यमंत्री बने बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर किसानों के सबसे स्वीकार्य नेता के रूप में भी उभरे। अपने मुख्यमंत्री काल (1987-89) के दौरान उन्होंने राज्य के विकास के लिए कुछ क्रांतिकारी कदम उठाए। चुनाव प्रचार के दौरान उन्होंने पूरे देश में दौरा किया और मतदाताओं को संगठित किया। उनके जोरदार प्रयासों के परिणामस्वरूप, राष्ट्रीय मोर्चे ने नौवीं लोकसभा में बहुमत का समर्थन हासिल किया। उन्होंने स्वयं सीकर (राजस्थान) और रोहतक (हरियाणा) संसदीय क्षेत्रों से चुनाव लड़ा और दोनों निर्वाचन क्षेत्रों से प्रचंड बहुमत से जीत हासिल की। दिसंबर, 1989 का पहला दिन चौधरी देवीलाल के लिए यादगार दिन था। नेशनल फ्रंट के नवनिर्वाचित सदस्यों ने अपना नेता चुनने के लिए संसद के सेंट्रल हॉल में बैठक की। वी.पी. सिंह ने चौधरी देवीलाल के नाम का प्रस्ताव रखा और चंद्रशेखर ने इसका समर्थन किया। चौधरी देवीलाल को सर्वसम्मति से संसदीय दल का नेता चुना गया। हालाँकि देवीलाल खड़े हुए और पहले निर्वाचित प्रतिनिधियों को धन्यवाद दिया और फिर यह कहते हुए प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया कि 'मैं हरियाणा में ताऊ कहलता हूँ। यहां भी ताऊ ही रहना चाहता हूं, मैं अपना नाम वापस लेता हूं और माननीय वी.पी. सिंह का नाम ताजविज करता हूं।' इस प्रकार, चौधरी देवीलाल ने भारत के समकालीन इतिहास में एक दुर्लभ बलिदान दिया। 2 दिसंबर, 1989 को देवीलाल को भारत के उप प्रधान मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया था और उन्हें उनकी पसंद के कृषि और पर्यटन विभाग आवंटित किए गए थे। वी.पी.सिंह को मौका देने के लिए भी उन्हें व्यापक सराहना मिली। नवंबर, 1990 में श्री चंद्रशेखर के प्रधान मंत्री बनने पर उन्हें दूसरी बार उप प्रधान मंत्री नियुक्त किया गया। इस प्रकार, उन्हें दो अलग-अलग प्रधानमंत्रियों के अधीन उप प्रधान मंत्री के रूप में सेवा करने का दुर्लभ गौरव प्राप्त हुआ। उप प्रधान मंत्री के रूप में उनका कार्यकाल छोटा था लेकिन एक विनम्र किसान से उप प्रधान मंत्री के पद तक उनका उत्थान वास्तव में उल्लेखनीय था। हालांकि वे मई 19s91 में हुए मध्यावधि चुनाव हार गए। चुनाव हारने के बावजूद वे सक्रिय राजनीति में बने रहे। उन्होंने ग्रामीण भारत को जगाने और गरीब किसानों के उत्थान के लिए काम करने के लिए 1992 में राज घाट, दिल्ली से अपनी चेतना यात्रा शुरू की। 1998 में, वह हरियाणा से राज्य सभा के सदस्य बने और तब तक बने रहे जब तक मृत्यु ने उन्हें 6 अप्रैल, 2001 को हमसे छीन नहीं लिया।

निष्कर्ष-

उपरोक्त शोध के आधार पर ये कहा जा सकता है कि चौधरी देवीलाल को समाज के बहुत बड़े हिस्से का समर्थन प्राप्त था। जनता की नजरों में उनका कैद बहुत ऊंचा है। उनका राजनीतिक जीवन संघर्षों, आन्दोलनों और त्याग से परिपूर्ण था, उन्होंने हमेशा अपने व्यक्तिगत हितों की अपेक्षा जनता का विशेषकर किसानों के हितों को ऊपर रखा। चौधरी देवीलाल जैसी भाषण कला हरियाणा के किसी भी नेता के पास नही थी। निसन्देह वो एक राष्ट्रीय नेता थे और हमेशा आत्मा की आवाज़ को सुनने वाले साफ छवि के राजनेता थे। वो किसी के भी प्रति यहाँ तक के अपने विरोधी के भी द्वेष की भावना नहीं रखते थे। सिद्धांतों के प्रति उनकी लगन, लोकतांत्रिक मूल्यों में अटूट विश्वास, गांधीवादी दर्शन और सबसे बढ़कर, जनता के लिए प्यार और स्नेह ने उन्हें उत्कृष्ट नेताओं में से एक बना दिया। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की सबसे खास बात यह थी कि सादगी उनके व्यक्तित्व का प्रतीक थी। आम लोग, विशेषकर किसान उनको उच्च सम्मान देते। 'लोकराज, लोकलाज से चलता है','एक नोट एक वोट', 'हर पेट मे रोटी, बाकी सब बात खोटी','भ्रष्टाचार बन्द पानी प्रबंध', 'हर सिर पर मकान' आदि प्रमुख नारों में जो चौधरी देवीलाल ने दिए हैं, वो आज भी जिंदा है। आज भी हजारों लोगों की जुबान पर उस महान शख्सियत का नाम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1) सिंह, डॉ. अमरजीत," जननायक चौधरी देवीलाल की जीवनी", हिंदी ऑडिओ बुक.

2) चंद्र यादव, कृपल, देवीलाल ए पोलिटिकल बायोग्राफी (पीजेंट्स स्टडीज), जनवरी, 2002

3)चोटाला, अजय सिंह, चो. देवीलाल: लाइफ, वर्क एंड फिलोसोफी, वॉल्यूम 2 ऑफ़ पीजेंट्स स्टडीज, 2003

4)चन्द्र, डॉ. सुभाष (अनुवादक),"हरियाणा में सत्ता की राजनीति",ज्ञान पब्लिकेशन, नई दिल्ली,2009.

5)बीबीसी 25 सितंबर 2017, https://www.bbc.com/hindi/india-41380024

6)बीबीसी 15 अक्टूबर 2019, https://www.bbc.com/hindi/india-50042819

7) CHAUDHARY DEVI LAL - A Profile , LOK SABHA SECRETARIAT NEW DELHI SEPTEMBER 2003

8)https://youtu.be/hND0uYAMVQ8

9) https://youtu.be/xL-zRiBN1wg

10) https://youtu.be/EqI8ctHw-EU

11) https://youtu.be/ocbp-WTYfNw

12) https://youtu.be/MUliFLz8s48

13) https://youtu.be/NPcJF8-yJeY

14) https://youtu.be/xr7D5182t70

15) https://youtu.be/AX5kICXQ4HI

16) https://youtu.be/Ze_w9kuiHZQ

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-January-2023/07

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

अंजू

For publication of research paper title

चौधरी देवीलाल : राजनीति के भीष्म पितामह

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-04, Month January, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com